ORIGINAL RESEARCH PAPER

Hindi

सम रेखा - विषम रेखा के शीर्षक की सार्थकता

KEY WORDS:

डॉ0 सुमन कुमारी

एसोसिएट प्रोफेसरए (हिन्दी विभाग) राजकीय महाविद्यालय टनकपुर (चम्पावत)

कहानी कही की भूति एकांकी विधा को भी कुछ विद्वान हिन्दी में अंग्रेजी साहित्य से प्रभावित होकर आया बतातें हैं, जबकि दूसरी ओर अन्य विद्वान हिन्दी एकांकी के स्त्रोत संस्कृत साहित्य में खोजते है। संस्कृत में अंक, वीथी, भाण, प्रहसन आदि जो रूपक नाटक का प्राचीन षास्त्रोक्त नामो के भेद बताए गए हैं, वे सब एक अंक वाले नाटक होने के कारण रूपकार की दृश्टि से ओधुनिक एकांकी से बहुत कुछ मिलते हैं। इस आधार पर हिन्दी एकांकी को संस्कृत साहित्य से सम्बनध करके भारतेन्दु हरिषचन्द्र द्वारा रचित 'अंधेरी नगरी' ''वैदिकी हिंसा हिंसा नभवति'' आदि में हिन्दी एकांकी का उद्भव परिलक्षित करते हैं। साथ ही कुछेक विद्वान जयषंकर प्रसाद रचित 'एक घूँट' कैसे हिन्दी एकांकी की षुरूआत मानते हें। एक अंक वाले होने से ही एकांकी माना युकितसंगत न होगा। असल में एकांकी के नाम से जिस अभिनव विधा का सूत्रपात हुआ, उससे विद्वानों ने अनभिज्ञता प्रकट की।

वास्त में हिन्दी एकांकी विधा का जो विषिश्ट रूप बाद में विकसित होकर साहित्य में सुस्थापित हुआ, वह प्रसाद जी के 'एक घूँट' के बाद डॉ0 रामकुमार वर्मा द्वारा रचित 'बादल की मृत्यु–जो सन् 1930 में प्रकाषित हुआ था– से ही आया। इसके बात तो हिन्दी एकांकी का परम्परा निरन्तर विकसित होकर सुस्थापित हो गई।

'सम रेखा–विशम रेखा' विश्णु प्रभाकर का एक बहुचर्चित एवं लोकप्रिय एकांकी रहा है। इसका आकाषवाणी से एकाधिक बार प्रसारण हो ही चुका है। दिल्ली तथा बाहर के अनेक नगरों मंचो पर इसका सफल अभिनय भी प्रस्तुत किया जा चुका है। इस एकांकी में विश्णु प्रभाकर ने सुनिष्चित समाज के पति–पत्नी के बीच के बीच के स्नेह–सौमन्स्य के सम्बन्धों के चलते कैसे अन्य पुरूश के आने से उसमें बिगाड़ आ जाता है और वह किस हद तक पहुँच जाता है–इसका सजीव और यथार्थ अंकन इस एकांकी में हुआ है।

साथ ही उन सम्बन्धों में कैसे सुधार आकर पुनः स्नेह–सौहार्द का वातावरण जीवंत हो जाता है–इस समाधान का संकेत भी इस एकांकी के अन्त में कर दिया गया है। एकांकीकार ने कथा की इसी पृश्ठभूमि तथा उद्देष्य को ध्यान में रखकर इसका षीर्शक ''सम रेखा–विशम रेखा'' उचित ही रखा है। सम रेखा पर चली आ रही रेखा और केषव के दामपत्य जीवन की दीप्ति उस समय फीकी पड़ जाती है जब रेवा का पूर्व प्रेमी रंजन आकार उसके धर में रहने लगता है और रेवा से बेतकल्लुफ व्यवहार करने लगता है। उधर रेवा उसके खुलेपन से खिल उठती है और यह भूल जाती है कि वह ऐसे पति की पत्नी है जो उससे बेहद प्यार करता है। वह अपने पूर्व प्रेमी के साथ इतनी धुलमिल जाती है कि वो जान ही नहीं पाती की चाहे–अनचाहे वो अपने पति की उपेक्षा कर रही है। इन्हीं सब से उसका पति केषव व्याकुल हो उठता है और उसके पति का अट्म जाग जाता है और यहीं से इन दोनों के बीच रंजन के प्रवेष से विशम रेखा खिंचने लगती है।

लेखक ने एकांकी के षीर्शक 'सम रेखा–विशम रेखा' को प्रतीकात्मक रखा है। समरेखा तो रेवा–केषव के दामपत्य जीवन स्नेहपूर्ण सुखी जीवन का प्रतीक है तो रंजन के आने से हालात के बिगाड़ से खिंची विशम रेखा उनके जीवन में आई कुटुता का प्रतीक है।

सुखी दामपत्य जीवन सामाजिक सौमनस्य की आधारषिला है– लेखक विश्णु प्रभाकर ने इसी सामाजिक–पारिवारिक समस्या को अपने इस एकांकी में उभारने का सफल प्रयास किया है।

पति पत्नि के पारस्परिक संबंध समरेखा के समान रहने चाहि–यदि इनमें किसी एक की ओर से भी असावधानी बरती गई या ढ़ील दी गई तो वह सम रेखा विशम रेखा में परिवर्तित होने लगती है। समय रहते यदि इस गलतीको सुधार लिया जाता है तो पुनः विशम रेखा को सम रेखा में बदला जा सकता हैं– विश्णु प्रभाकर ने एकांकी के इस षीर्शक के द्वारा सांकेतिक तौर पर इसका निश्कर्श समाहित कर है।

निष्चिय ही, इस एकांकी का षीर्शक कथानक के सार को समाहित करते हुए इसके प्रमुख पात्रों की चरित्रिक विषेशताओं को रेखांकित भी करता है– साथ ही उसके उद्देष्य की ओर भी संकेत करता है। इस प्रकार 'सम रेखा–विशम रेखा' षीर्शक सारपूर्ण और सार्थक है।

सहायक ग्रन्थ–सूची

1. लेखक का नाम – पुस्तक का नाम या एकांकी का नाम
विश्णु प्रभाकर – सम रेखा–विशम रेखा
2. रामवृक्ष बेनीपुरी – चार एकांकी
3. जयषंकर प्रसाद – हिन्दी की प्रथम एंकाकी
4. डॉ0 रामकुमार वर्मा – रेषमी टाई